भूमि: स्वर्गताम् यातु
मनुष्यो यातु देवताम्
धर्मो सफलताम् यातु
नित्यम यातु शुभोदयम्

आप्त बन्धुओं-

इस मंगलमय दिवस में वर्तमान तक प्रावधानित शिक्षा के परिणाम से अतृप्त एवं असन्तुष्ट होकर उसमें गुणात्मक परिवर्तन एवं परिमार्जन पूर्वक विकास के अर्थ को चिरतार्थ करने की शुभापेक्षा में परस्पर चिंतन पूर्ण प्रस्तावनाओं को आदान-प्रदान करने के उद्देश्य से सम्मिलित हुये है । यह ऐतिहासिक प्रयास क्रम में एक सोपान है । चिंतनशील मनीषियों के सम्मेलन का शुभ एवं सफलता शिक्षा के अपूर्णता एवं अपर्याप्तता को पूर्णता एवं पर्याप्तता अथवा उनके दिशा में समुचित मौलिक तत्वों को समावेश कर समृद्ध एवं परिष्कृत करना ही है ।

इस गरिमा सम्पन्न मंच के सम्मुख जो शिक्षा एवं राष्ट्रीयता सम्बंधी सुझाव प्रस्तुत कर रहा हूँ वह अधिभौतिक वादी दर्शन एवं भौतिक वादी दर्शन पर आधारित है । विश्व दृष्टिकोण से भिन्न मध्यस्थ दर्शन अर्थात् सह: अस्तित्व वादी विश्व दृष्टिकोण पर आधारित है । शिक्षा का आद्योपांत तात्पर्य "शिष्टतयास इष्यैतेति स शिक्षा:" अर्थात् शिष्टता पूर्ण दर्शन क्षमता एवं राष्ट्रीय विकास का आयदोपांत तात्पर्य संस्कृति सभ्यता विधि एवं व्यवस्था का सामरस्यता है जिसको ज्ञान मिमांसा, तत्व मिंमासा, कर्म मिंमासा एवं व्यवहार मिमांसा पूर्वक यथावत स्पष्ट एवं प्रकाशित किया है । अत: मुझे विश्वास है कि इससे मानव मूल्यों का सार्थकतापूर्वक राष्ट्रीय विकास सुलभ हो जावेगी ।

शिक्षा संस्थानों के अध्ययनान्तर्गत प्रधानत: विषय वस्तुयें संस्कार पूर्व परावर्तित एवं प्रत्यावर्तित होता है । यही मनुष्य के चारों आयामों अर्थात् अनुभूति विचार व्यवहार एवं व्यवसाय तथा पांचो स्थितियों व्यक्ति, परिवार समाज राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्र में अभय - भय, समाधान - समस्या, सह: अस्तित्व-असह अस्तित्व व समृद्धि - असमृद्धि का मूल कारण है । शिक्षा का सार्थक विषय वस्तु ही परावर्तित होकर मनुष्य को व्यवहार में सामाजिक एवं व्यवसाय में स्वावलम्बी प्रमाणित करता है । यही सार्वभौम अभिष्ट शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास का आधार रहेगा । ऐसे शिक्षा का सार्वभौम अभिष्टात्मक उद्देश्य के चरितार्थ होने के लिए विद्यार्थियों में व्यक्तित्व एवं प्रतिभा का संतुलित उदय होना अपरिहार्य है । व्यक्तित्व का तात्पर्य एवं सम्पूर्णता आहार बिहार एवं

व्यवहार मानवता के सामा में संयत होने से, प्रतिभा का तात्पर्य एवं सम्पूर्णता निपुणता, कुशलता एवं पाण्डित्य से एवं व्यक्तित्व एवं प्रतिभा का संतुलन उदय का तात्पर्य एवं सम्पूर्णता जाने हुये को मानने एवं माने हुये को जानने से है ।

मनुष्य भौतिक समृद्धि एवं बौद्धिक समाधान पूर्वक अपने अपरिष्कृत समाज चेतना के अवस्था से ही सुखी होने के लिये अनवरत प्रयास रत रहा है एवं प्रयास विधायें विभिन्न देश काल परिस्थितियों में विकसित होते रहे फलतः शिक्षा के मूल विषय वस्तु प्रणाली, पद्धति एवं नीति में वैविध्यता स्पष्ट हुई । इसी क्रम में वर्तमान में उदबोधन एवं प्रबोधन पूर्वक विषय वस्तु प्रधानतः आठ विषयों - विज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन, अर्थ, समाज, राजनीति, भूगोल व इतिहास एवं साहित्य में वर्गीकृत है । वर्तमान में विज्ञान में मात्र जड़ पक्ष का अर्थात भौतिक रसायनिक परिणाम एवं परिवर्तन सामावर्ती नियम एवं प्रक्रिया चेतना को, मनोविज्ञान में चेतना को वंशानुषंगीय अर्थात बीज-वृक्ष न्यायात्मक चेतना को दर्शन में आधिदैविक, आधिभौतिक एवं भौतिकवादी अर्थात रहस्यात्मक अध्यात्मवाद संघर्षात्मक जनवाद एवं द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी चेतना को, अर्थशास्त्र में लाभोन्मादी, अर्थात सम्पत्तिकरण, संग्रह, सुविधा, भोग एवं अतिभोगवादी चेतना को राजनीति में वर्गीय शासन अर्थात शक्ति व अधिकार चेतना को, समाज शास्त्र में विभिन्न परम्पराओं को अर्थात अनेक संस्कृति व सभ्यताओं के आकलनात्मक चेतना को, भूगोल व इतिहास में भौतिक सर्वेक्षण एवं घटनाओं के आकलनात्मक चेतना को एवं साहित्य में रुचि रस प्रतीक एवं रहस्य पर आधारित समीक्षा अर्थात भय श्रृंगार विभित्स जैसे अविकासात्मक चेतना को प्रतिरोपित किया जाना अथवा संस्कार बद्ध करना पाया जाता है ।

उक्त प्रकार के विहंगावलोकन के द्वारा हम इस निष्कर्ष में पहुँचते है कि शिक्षा के वस्तु विषय का परावर्तन वर्ग एवं व्यक्तित्ववादी चेतना को

जागृत करता आया । फलत: वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व भयाक्रान्त होकर अपने को असुरक्षित एवं संदिग्ध स्थिति में पा रहा है । इतना ही नहीं ब्रह्माण्ड के अंगभूत इस पृथ्वी में मनुष्य जनजाति का भविष्य में उनका अस्तित्व ही संदिग्धपूर्ण हो चुका है । क्योंकि वर्तमान शिक्षा के द्वारा मनुष्य का सम्पूर्ण आयाम दिशा कोण एवं परिपेक्ष सम्बन्धी अध्ययन परिस्कृत एवं समृद्ध नहीं हो पाया है जबकि मनुष्य में, से के लिए ही शिक्षा विधि एवं व्यवस्था देना चाह रहे है । और इस तरह मनुष्य के अध्ययन को गौण बना कर मनुष्येतर प्रकृति के सम्बन्ध में विशेष अध्ययन एवं अनुसंधान में व्यस्त हुये और इस तरह अधि दैविक, अधिभौतिक एवं भौतिकवादी दर्शन पर आधारित शिक्षा मनुष्य अर्थात चैतन्य प्रकृति के अध्ययन की आवश्यकता को विस्मृत करा दिया ।

अब सन्निहित समस्याओं के संदर्भ में विशेष चर्चा की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती है क्योंकि वर्तमान शिक्षा के पराभव को हम सब अनुभव एवं स्वीकार कर चुके हैं । अस्तु वर्तमान में दिये जाने वाली शिक्षा स्वस्थ सामाजिकता एवं व्यवस्था को सार्थक बनाने में, इसके लिए अपर्याप्त अपूर्ण एवं अक्षम है । वर्तमान शिक्षा की सार्थकता केवल साक्षरता एवं विज्ञान व तकनीकि के सीमा में सीमित है जिससे उत्पादनीय क्षमता की उन्नति हुई है और यही कारण रहा है कि उक्त सीमा में प्रतिभा एवं व्यक्तित्व संतुलन होना संभव नहीं हुआ ।

अभिष्टात्मक उद्देश्य के प्राप्ति हेतु विषय वस्तु के आधार पर ही व्यवस्था में प्रणाली पद्धति एवं नीति का उन्नयन हुआ करता है । इसी, सत्यतावश मुझे विश्वास है कि शिक्षा में विषय वस्तु की अपूर्णता को पूर्णता प्रदान करने की दिशा में सक्रिय होना ही इस शुभ सम्मेलन की सफलता है ।

इसी मंगलमय आशय के सार्थकता में मेरा सुझाव है कि विज्ञान में चैतन्य पक्ष अर्थात मन वृत्ति चित्त बुद्धि व आत्मा के अक्षय शक्ति स्वरूप आशा विचार इच्छा संकल्प एवं अनुभूति के गुणात्मकता फलत: क्रियापूर्णता व आचरणपूर्णता को भी, मनोविज्ञान में संस्कार पक्ष को अर्थात मनुष्य में पाये जाने वाले विषय, दृष्टि एवं स्वभावों के प्रति होने वाले प्रवृत्ति, वृत्ति एवं निवृत्तियों के योग फल में मानवीय तथा अतिमानवीयता को भी, दर्शनशास्त्र के साथ क्रिया पक्ष को अर्थात सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति प्रकृति का विकास और विकास क्रम में चैतन्य पद (क्रियापूर्णता) एक घटना, जीवन पद, जीवन, जीवनक्रम एवं जीवनी कार्यक्रम को भी, अर्थशास्त्र में तन मन एवं धनात्मक अर्थ का सदुपयोग एवं सुरक्षा अर्थात अधिक उत्पादन एवं कम उपभोग जो मानवीयता के सीमा में अपव्यय समाप्त होकर भोग सीमित होकर सफल होता है को भी, अर्थात सम्पत्तिकरण के स्थान पर साधनीकरण को भी, समाज शास्त्र में मानवीय संस्कृति एवं सभ्यता अर्थात स्थापित सम्बन्धों में निहित स्थापित मूल्यों का निर्वाह को भी, राज्यनीति में मानवीयता संरक्षण अर्थात न्याय सुलभता एवं विनिमय सुलभता को भी भूगोल व इतिहास में विकास घटना एवं विकास घटना क्रम में मनुष्य का होना तथा उनके विकास के इतिहास को भी, तथा साहित्य में तात्विक पक्ष को अर्थात स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य एवं वस्तुगत सत्य का पूर्ण अभिव्यक्ति एवं संप्रेषणीयता को भी शिक्षा के विषय वस्तु के रूप में समावेश किया जाय ।

अब मैं आप चिंतनशील मनीषियों से अपेक्षा करता हूँ कि शिक्षा के विषय वस्तु प्रणाली पद्धति, नीति को समृद्ध एवं परिष्कृत पूर्वक स्थापना एवं उसकी निरंतरता की दिशा में हम एक सर्वसम्मत शिक्षा सम्बन्धी तत्वों को निर्धारण करने के लिए "सुझाव सम्बन्धी विषय वस्तुओं का साधिकार अध्ययन

D519 16.11 वर्तमान शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन हेतु प्रस्ताव_c (1985-1995)

व्यवस्था", आठों विषयों के साथ पु[illegible] में अपेक्षा करने वाली वस्तु विषय का पाठ्य पुस्तकों के रूप में व्यवस्थित अध्यापकों को शिक्षा में शिक्षा समृद्धि हेतु प्रशिक्षण व्यवस्था अध्ययन की समीक्षा और व्याख्यता को शासन से अवगत कराकर सम्मति प्राप्त करने की व्यवस्था एवं सर्वप्रथम प्रयोग में कम से कम एक राज्य में आत्मसात होने, की व्यवस्था इन बिन्दुओं पर सक्रियता वर्तना आवश्यक है । अस्तु मैं विश्वास करता हूँ कि यथार्थता, वास्तविकता व सत्यता पर आधारित सम्पूर्ण सुझावों के प्रति आप सबलोगों का व्यवहारिक सहयोग निरंतर रहेगा ही । जिससे भविष्य में सह अस्तित्व, समृद्धि अभय एवं समाधान जैसी सार्वभौम आकांक्षाओं के चरितार्थ होने की संभावना सुनिश्चित एवं प्रबल हो सके । क्योंकि यही शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास का यथार्थ व्यवहार स्वरूप है । यहीं भूमि स्वर्ग होने, मनुष्य देवता होने, धर्म सफल होने एवं नित्य मंगल होने का प्रमाण होगा ।

शिक्षा के क्षेत्र में डा० जाकिर हुसैन अनौपचारिक एवं अनवरत शिक्षण संस्थान का गुरुतर प्रयास के प्रति मंगल कामना सहित- धन्यवाद ।

ए० नागराज शर्मा

मध्यस्थ दर्शन का प्रणेता एवं लेखक
श्री भजनाश्रम
श्री नर्मदा अंचल - अमर कंटक
जिला - शहडोल (भारत)